

## नवगौरी यात्रा

---

पाँचवें अध्याय में गौरीपाठों का वर्णन करते हुए इस विषय की पूरी विवेचना हो चुकी है और जैसा वहाँ कहा जा चुका है, इस यात्रा में प्रत्येक गौरी के पूजन के पूर्व वहाँ के तीर्थों में स्नान का नियम है। यह यात्रा प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की तृतीया को होती है, परन्तु चैत्र शुक्ल-तृतीया का विशेष माहात्म्य

है। पुराने समय में चैत्र नवरात्र में नवगौरी का पूजन उसी प्रकार क्रमपूर्वक होता था, जैसे आश्विन नवरात्र में नवदुर्गा का पूजन। अर्थात्, प्रतिपदा से नवमी तक प्रत्येक दिन एक-एक गौरी का क्रम से पूजन होता था।